Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIV (54), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

भूमि अधिग्रहण एक अमानवीय कृत्य

डॉ. मनीषा सिंह मरकाम* पूजा वर्मा**

*** सहा. प्रा. (हिन्दी) प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस श्री अटल बिहारी वाजपेयी,शा. कला एवं वाणिज्य महा., इन्दौर (म.प्र.) भारत**
**** शोधार्थी, प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस श्री अटल बिहारी वाजपेयी, शा. कला एवं वाणिज्य महा., इन्दौर (म.प्र.) भारत**

शोध सारांश – 'भूमि अधिग्रहण' शब्द जो की प्राचीन काल से दलितों के लिए काल के सर्प के समान है जो सदियों से उनकी भूमि को निगलता चला आया है। दलित वर्ग के पास यदि भूमि का छोटा –सा टुकड़ा भी रहा तो वह गांव में 'विकास' के नाम पर जमीदारों, सेठों और सवर्णों की नजरों से छिप नहीं सका है। ऐसी ही कई घटनाओं को हमारे फिल्म निर्माता भी कई दशकों से पर्दे पर उतारते आ रहे हैं। जैसे– मदर इंडिया, हिम्मतवाला, जॉली एलएलबी 3, जय गंगाजल जैसी कई फिल्मों के नाम गिनाए जा सकते हैं। सवर्णों ने यह कभी नहीं चाहा कि दलित कभी भी उनकी बराबरी करें और उनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर बैठे इसलिए प्रथम उन्होंने दलित वर्ग को भूमि के आधार पर रात दिन खत्म न होने वाले ब्याज पर कर्ज दिया, फसल आने पर दलितों की ओर से दी गई रकम में जमींदार वर्ग का सूत भी पुरा न हो सकता था तो मूल की तो बात ही क्या की जाए।
शब्द कुंजी– फिल्म – चलचित्र,ऋण – कर्जब अधिग्रहण– हथियानाब बंधुआ – आजीवन बंधकर काम करना।

प्रस्तावना – दलित वर्ग अपनी धरती मां के भरोसे अपने जीवन को व्यतीत कर रहे थे, लेकिन कभी वह पारिवारिक कारण या कृषि संचालन हेतु कई कारणों से दलित जमींदारों से कर्ज लेता गया और परिणाम स्वरूप जमींदार वर्ग ने कई गुना ऋण उन पर थोप कर दलितों की भूमि को अपने कब्जे में कर लिया। इसका नतीजा यह हुआ कि दलित आजीवन अपनी ही जमीन पर बंधुआ मजदूर बनकर रह गया।

भूमि को अपने जाल साझी दांव पेंच से कैसे हथियाना है इस कृत्य के कई उदाहरण हमारे साहित्यकारों की विधाओं में परिलक्षित होते हैं। जयप्रकाश कर्दम, सुशीला टाकभौरे, मोहनदास नैमिषराय जैसे कई दलित साहित्यकार जिन्होंने दलितों के दर्द की मूक वाणी को अपनी कलम से शब्दों द्वारा कागजों पर उतारा और उस दर्द से दुनिया का परिचय करवाया। नैमिशराय जी ने अपने उपन्यास 'जख्म हमारे' में दंगों के बाद की भयावह स्थिति का चित्रण किया है। भूमि अधिग्रहण के चलते दलितों के पास जो भूमि थी वह भी छोटी होती जा रही थी। दंगों के बाद तो दलितों की गलियां और संकरी होती गई। 'दंगे के बाद गलियां संकरी हो गई थी जिनके बीच से निकलना मुश्किल होता था। फिर भी बाहर से आकर लोग फंस रहे थे, जमीन छोटी होती जाती थी। बरसात के गंदे नाले का पानी उनके घरों में घुस जाता वह घर के बाहर निकल आते हालांकि उनके पास आंगन नहीं थे ना ही छते थी। अगर थी तो वह संकरी गलियां।'[1] कालांतर में यह समस्या कहीं ना कहीं समाचार पत्रों के माध्यम से हमारे सामने उपस्थित हो ही जाती है, लेकिन इस शोषण का शिकार बस दलित वर्ग ही होता है।

दलितों के पास भूमि नहीं, मजदूर को मजदूरी नहीं, तो वह एक पालतू पशु की भांति सवर्णो के अधीन जीवन जीने को विवश हो जाता है। भूमि ही उनकी माता है, यह मानकर वह अपना कर्म करता है। मोहनदास नैमिशराय 'जख्म हमारे उपन्यास में बड़ी ही निष्पक्षता से इस सच्चाई को दिखाते हैं।' गरीबी रेखा के नीचे जीने वाले भूमिपुत्र थे वे। भूमिपुत्र होने पर भी जमींन का छोटा–सा टुकड़ा भी उनकी मिल्कियत नहीं थी। हर जमींन से उनके रिश्ते गहरे जरूर थे कभी–कभी खुदाई करते–करते उनके हाथ पैरों में चोट लग जाती थी कोई डॉक्टर भाग –भाग कर उन तक नहीं पहुंचता था कोई उनके घाव को साफ कर मरहम पट्टी नहीं करते थे वह ताजा जख्मों को मिट्टी से ठीक कर लेते और मिट्टी ही उनका जीवन था।'[2]

जमींदार वर्ग दलित के चोटिल होने पर उन्हें और भी सजा देते, उन्हें उनके दर्द, जख्म से कोई फर्क न पड़ता था, उनका काम नहीं रुकना चाहिए। बस यही रिश्ता था– जमींदार और दलित वर्ग के बीच। दलितों का जीवन अत्यंत दयनीय रहा है ना उन्हें पेट भर खाना मिलता है, और ना ही शरीर ढकने को पर्याप्त वस्त्र और ना ही धूप से बचने लायक कोई घर। मानव शरीर धारण करने मात्र से उन्हें मानव संज्ञा प्राप्त होती है अन्यथा और कुछ नहीं। उनका जीवन पशु– पक्षियों के जीवन से भी ज्यादा गया गुजरा व्यतीत होता है। दलितों के अभावग्रस्त जीवन का वर्णन नैमिषराय जी ने अपने उपन्यास 'मुक्ति पर्व' में कुछ इस प्रकार किया है– 'गांव में किसी के बदन पर भी उजले कपड़े ना देखे थे उसने। धूल मिट्टी से सने बदन और उस पर फटे पुराने कपड़े गांव के अधिकांश बच्चे तो अर्धनग्न ही होते थे।'[3]

वर्तमान परिदृश्य में यही हमारे जीवन की सच्चाई है कि सभी धरती माता के पुत्र हैं लेकिन सभी के अधिकार अलग और ऊँचे थे। स्वतंत्रता के बाद भी दलितों को अपनी भूमि पर बने रहने हेतु कई लड़ाईयाँ लड़नी पड़ी। सवर्ण दलितों को भूमि का एक टुकड़ा भी नहीं देना चाहते थे बल्कि दलितों के पास जो भूमि है उसे भी हथियाने का वे प्रयास करते थे।

मोहनदास जी ने अपने उपन्यास 'महानायक बाबा साहब डॉ. अंबेडकर' में दलितों के उत्थान के लिए बाबा साहब ने जो प्रयास किए हैं उसे प्रस्तुत किया है। जब नेहरू जी ने दिल्ली को जमीन देने से मना कर दिया था तब डॉक्टर अंबेडकर जी ने नेहरू से कहा 'मैं अपनी आंखों से खाली बंजर भूमि देखकर आया हूं जो खेती करने योग्य बनाई जा सकती है। उस भूमि को

हमारे लोगों को बांट दिया जाए अगर नेहरू ने हमारी बात नहीं मानी तो मैं स्वयं अपने लोगों को इस पर कब्जा कर लेने की सलाह दूंगा।'[4]

बाबा साहब आजीवन दलितों के उद्धार के लिए संघर्ष करते रहे। वे शिक्षा को ही समानता का एकमात्र हथियार बताते हैं, वह कहते थे, 'शिक्षित बनो संगठित बनो' सभी प्रकार के भेदभावों का एक ही उत्तार था– शिक्षा और शिक्षा।

निष्कर्ष – भूमि अधिग्रहण वर्तमान में भी एक सर्पिणी का रूप धारण किए हुए हैं, वैसे तो आज का दलित वर्ग भी संघर्ष कर शिक्षित हुआ है और अपने अधिकारों के लिए प्रयास रत भी है, किंतु कुछ अनपढ़ लोग अभी भी बिना किसी जांच पड़ताल के किसी भी कागज पर अंगूठा लगाकर जमीदारों के आजीवन गुलाम बन जाते हैं, जिनका खामियाजा आने वाली पीढ़ी को भुगतना पड़ता है।

मोहनदास जी ने अंबेडकर के प्रयासों को अपने उपन्यासों में स्थान दिया है। उनका साहित्य डॉ अंबेडकर के विचारों से अनुग्रहित है, वह अपने उपन्यासों में शिक्षा, समानता व बंधुत्व और सामाजिक मूल्यों को प्रतिष्ठित करते हैं।

अभी भी कुछ हद तक दलित वर्ग को अपने व्यक्तित्व को ऊपर उठने के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है। दलित वर्ग को अपने वजूद को दुनिया के सामने प्रस्तुत करने हेतु शिक्षा को आधार बनाना ही पड़ेगा तभी वह इन जमीदार वर्ग के जाल से बाहर निकल सकेंगे।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. जख्म हमारे, मोहनदास नैमिशराय, पृष्ठ संख्या, 169
2. जख्म हमारे, मोहनदास नैमिशराय, पृष्ठ संख्या, 35
3. मुक्ति पर्व, मोहनदास नैमिशराय, पृष्ठ संख्या, 17
4. महानायक बाबा साहेब डॉ अंबेडकर, मोहनदास नैमिशराय, पृष्ठ संख्या, 226–227

****